डॉ० संगीता राय
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

रत्नावली नाटिका

चरित्र चित्रण :— रत्नावली

⇒ विक्रमबाहु सिंहलेश्वर की कन्या रत्नावली, रत्नावली नाटिका की मुख्या नायिका है। जोकि प्रायः सर्वत्र सागरिका नाम से कही गई है। वह अनुपमा सुन्दरी है। महामात्य यौगन्धरायण के आग्रह पर वासवदत्ता उसे अपनी परिचारिका भले ही बना लेती है पर उसे सागरिका के रूप लावण्य पर उदयन के मुग्ध हो जाने का सन्देह निरन्तर बना रहता है। वह सागरिका को राजा उदयन के सामने पड़ने नहीं देती है। सुसंगता का यह कथन है कि - 'ईदृशस्य कन्यारत्नस्यावश्यमेवेदृशो वरेडभिलाषेण भवितव्यम्।' उसकी सुन्दरता को ही प्रमाणित करता है। पुनः विदूषक (वसन्तक) भी यह कहकर कि - 'ईदृशं रूपं मनुष्यलोके न पुनर्दृश्यते। 'तत्कर्यामि प्रजापतेरपीदं विस्मयः समुत्पन्न इति। उसके लावण्य की प्रशंसा ही करता है। स्वयं राजा उदयन भी चित्रलिखित सागरिका को देखकर सौन्दर्य-मुग्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त सिद्ध पुरुष की भविष्यवाणी - 'इस रत्नावली का जिस पुरुष के साथ विवाह होगा वह चक्रवर्ती राजा बनेगा' से रत्नावली की सुन्दरता में और भी चार चाँद लग जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप महामात्य (यौगन्धरायण) महान् षड्यन्त्र करके भी रत्नावली को उदयन की प्रेयसी (पत्नी) बनाता है। उदयन का मित्र वसन्तक भी सागरिका (रत्नावली) के राजा से मिलने के लिए

उसके गाज्य की प्रशंसा करने लगता है - 'क्याऽपूर्वा श्रीः समासादिता'।

सुन्दरी होते हुए भी रत्नावली स्वाभिमानिनी है। अन्तःपुर में रहने पर भी वह अपना रहस्य किसी से प्रकट नहीं करती है। नाटकीय ढंग से अन्तःपुर में आने पर भी वह आन्तरिक क्लेश से अपना जीवन दूषित समझती है - 'तत् परप्रेषणदूषितमपि मे जीवितम्'। वह वासवदत्ता के सेवा-रूपी गहन तप को स्वाभिमान से पत्थर की छाती करके सह लेती है। इसके अतिरिक्त वह अपने प्रतिष्ठित कुल की मर्यादा का ध्यान निरन्तर रखती है। सुसंगता के द्वारा बार-बार प्रेम-रहस्य प्रगट करने के लिये आग्रह करने पर भी - 'प्रिय सखि! महती खलु मे लज्जा। तत् तथा कुरु यथा न कोऽप्यपरः एतद् वृत्तान्तं जानाति।' कहकर अपनी शालीनता का परिचय देती है। राजकुलानुरूप उसे शिक्षा भी मिली है क्योंकि उसके द्वारा अपने मित्र उदयन का बनाया हुआ स्वाभाविक चित्र सरलता से सुसंगता पहचान लेती है। इतना सब होते हुए भी उसका उदयन के प्रति अटूट प्रेम है, वह उदयन के बिना जीवित रहने को तैयार नहीं है। उदयन से मिलने से निराश होकर आत्महत्या का प्रयास करती है। अन्तःपुर में लगी आग को देखकर - 'अद्य हुतवहो दिष्ट्या करिष्यति मे दुःखावसानम्'। वह उठती है परन्तु जैसे ही वह रक्षार्थ आये हुए उदयन को देख लेती है तो वह तहात् कह उठती है - 'भर्तः, परित्रायस्व, परित्रायस्व'। अन्त में वह उदयन को पाने में सफल हो जाती है।

— x —